ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 **PP. NO.- 83-84**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

मानव का प्राकृतिकरण और पर्यावरण संरक्षण

खेदूराम यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर–भूगोल विभाग, जवाहर लाल नेहरू स्मारक पी0जी0 कालेज, महराजगंज (उ0प्र0) भारत

Received- 18.10.2019, Revised- 23.10.2019, Accepted - 26.10.2019 E-mail: khedooramyadav@gmail.com

सारांश : *मनुष्य अपनी प्रौद्योगिकी की सहायता से अपने भौतिक पर्यावरण से अन्योन्यक्रिया करता है। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि मानव क्या उत्पन्न और निर्माण करता है, बल्कि यह अत्यन्त महत्वूपर्ण है कि वह ''जिन उपकरणों और तकनीकों की सहायता से उत्पादन और निर्माण करता है।''*

प्रौद्योगिकी किसी समाज के सांस्कृतिक विकास के स्तर की सूचक होती है। मानव प्रकृति के नियमों को बेहतर ढंग से समझने के बाद ही प्रौद्योगिकी का विकास कर पाया उदाहरणार्थ घर्षण और उष्मा की संकल्पनाओं ने अग्नि की खोज में हमारी सहायता की, इसी प्रकार डी0एन0ए0 और अनुवांशिकी के रहस्यों की समझ नें हमें अनेक बीमारियों पर विजय पाने के योग्य बनाया, अधिक तीब्र गति से चलने वाले यान विकसित करने के लिए हम वायु गति के नियमों का प्रयोग करते है।

कुंजी शब्द – भौतिक पर्यावरण, अन्योन्यक्रिया, प्रोद्योगिकी, अनुवाशिंकी, घर्षण, उष्मा, सांस्कृतिक विकास।

आप देख सकते है कि प्रकृति का ज्ञान प्रौद्योगिकी को विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है और प्रौद्योगिकी मनुष्य पर पर्यावरण की बंदिशों को कम करती है। प्राकृतिक पर्यावरण से अन्योन्यक्रिया की आरंभिक अवस्थाओं में मानव इससे अत्यधिक प्रभावित हुआ था, उन्होनें प्रकृति के आदेशों के अनुसार अपने आप को ढ़ाल लिया। इसका कारण यह है कि प्रौद्योगिकी का स्तर अत्यंत निम्न था और मानव के सामाजिक विकास की अवस्था भी आदिम थी। आदिम मानव समाज और प्रकृति की प्रबल शक्तियों के बीच इस प्रकार की अन्योन्यक्रिया को पर्यावरणीय निश्चयवाद कहा गया। प्रौद्योगिकी विकास की उस अवस्था में हम प्राकृतिक मानव की कल्पना कर सकते है जो प्रकृति को सुनता था उसकी प्रचंडता से भयभीत होता था और उसकी पूजा करता था। जैसे बेंदा मध्य भारत के अबूझमाड क्षेत्र के जंगलों में रहता है उसके गाँव में तीन–चार झोपडियाँ है जो जंगल के बीच है। यहाँ तक कि पक्षी और आवारा कुत्ते जिनकी भीड़ प्रायः गाँवों में मिलती है, भी यहाँ दिखाई नहीं देते। छोटी लंगोटी पहने और हाथ में कुल्हाड़ी लिए वह पेंडों (वन) का सर्वेक्षण करता है, जहाँ उसका कबीला कृषि का आदिम रूप स्थानांतरी कृषि करता है। वेंदा और उसके मित्र वन के छोटे टुकड़ों को जुताई के लिए जलाकर साफ करते है। राख का उपयोग मृदा को उर्वर बनाने के लिए किया जाता है। अपने चारो ओर खिले हुए महुआ वृक्षों को देखकर बेंदा प्रसन्न है जैसे ही वह महुआ, पलाश और साल के वृक्षों को देखता है। जिन्होनें बचपन से ही उसे आश्रय दिया है वह सोचता है कि इस सुंदर ब्रह्मांड का अंग बनकर वह कितना सौभाग्शाली। विसर्पी गति से पेंडा को पार करके बेंदा नदी तक पहुँचता है। जैसे ही वह चुल्लू भर जल लेने के लिए झुकता है, उसे वन की आत्मा लोई–लुगी की प्यास बुझाने की स्वीकृति देने के लिए धन्यवाद करना याद आता है। अपने मित्रों के साथ आगे बढ़ते हुए बेंदा गूद्देदार पत्तों और कंदमूल को चबाता है, लडके वन से गज्जहरा और कुचला का संग्रहण करने का प्रयास कर रहे है। ये विशिष्ट पादप है जिनका प्रयोग बेंदा और उसके लोग करते है। वह आशा करता है कि वन की आत्माएँ दया करेंगी और उसे उन जड़ी बूटियों तक ले जायेंगी, ये आगामी पूर्णिमा को मधाई अथवा जनजातिय मेले में वस्तु विनिमय के लिए आवश्यक है। वह अपने नेत्र बंद करके स्मरण करने का कठिन प्रयत्न करता है जो उसके बुजुर्गों ने उन जड़ी बूटियों और उनके पाए जाने वाले स्थानों के बारे में समझाया था। वह चाहता है कि काश उसने अधिक ध्यानपूर्वक सुना होता। अचानक पत्तों में खड़खड़ाहट होती है। बेंदा और उसके मित्र जानते है कि ये बाहरी लोग है जो इन जंगलों में उन्हें ढूँढते हुए आए है। एक ही प्रवाही गति से बेंदा और उसके मित्र सघन वृक्षों के वितान के पीछे अदृष्य हो जाते है और वन की आत्मा के साथ एकाकार हो जाते है। इस तरह से वन किसी भी राष्ट्र की अति मूल्यवान सम्पत्ति है। क्योंकि वनों से उद्योगों के लिए कच्चे पदार्थ मिलते है। भवन निर्माण के लिए उपयोगी लकड़ियाँ प्राप्त होती हैं। विभिन्न प्रकार के जन्तुओं तथा सूक्ष्म जीवों के लिए अनुकूल आवास सुलभ होते है। जैविक एवं पोषक तत्वों से भरपूर मिट्टियों का निर्माण होता है। मिट्टियों का अपरदन से बचाव होता है। वर्षा के जल के अधिकतम अन्तःसंचरण (Infiltration–रिसाव) के कारण भूमिगत जल में वृद्धि होती है। धरातलीय वाही जल (Surface, run off) में निहायत कमी होती है।

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

परिणाम स्वरूप बाढ़ की आवृत्ति (Freeguency) तथा परिमाण (Magnitude) में पर्याप्त कमी होती है। वर्षा में वृद्धि होती है, वन कार्बन–डाई–आक्साइड का अधिकाधिक मात्रा में अवशोषण करते है। लाखों लोगों को जलावन लकड़ी उपलब्ध होती है। मनुष्य तथा जन्तुओं को शरण एवं आहार मिलते है आदि। वास्तव में वन किसी भी राष्ट्र की जीवन रेखा (Life line) है, क्योंकि राष्ट्र विशेष के समाज की समृद्धि तथा कल्याण उस देश की स्वस्थ एवं समृद्ध वन सम्पदा पर प्रत्यक्ष रूप से आधारित होता है। वन प्राकृतिक परिस्थितिकी तंत्र या तंत्र के जैविक संघटकों में से एक महत्वपूर्ण संघटक है तथा पर्यावरण की स्थिरता तथा पारिस्थितिकीय सन्तुलन उस क्षेत्र की वन सम्पदा की दशा पर आधारित होता है।

यह घोर चिन्ता का विषय है कि वर्तमान आर्थिक मानव ने प्राकृतिक वनस्पतियों के पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकीय महत्व को भुला दिया है तथा उनका इतनी तेजी से सफाया किया है कि स्थानीय, प्रादेशिक एवं विश्व स्तरों पर अनेक पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकीय समस्यायें उत्पन्न हो गयी है, यथा–मृदा–अपरदन में वृद्धि, बाढ़ों की आवृत्ति तथा विस्तार में वृद्धि, वर्षा में कमी के कारण सूखे की घटनाओं में वृद्धि, जन्तुओं में कई जातियों का विलोपन आदि पारिस्थितिकीय दृष्टिकोण से प्रत्येक देश के समस्त भौगोलिक क्षेत्रफल के कम से कम एक तिहाई भाग पर घना वनावरण होना चाहिए, परन्तु इस पारिस्थितिकीय नियम का प्रत्येक देश में उलंघन किया गया है। विकासशील देशों में जनसंख्या में अपार वृद्धि होने के कारण कृषि क्षेत्रों में विस्तार करने के लिए उनके वन क्षेत्रों के एक बड़े भू–भाग का सफाया किया जा चुका है। साथ ही साथ नगरीकरण की दौड़ में बाधक बन रही वनस्पतियों को अंधाधुंध काटा जा रहा है। भारत भी वन विनाश की इस दौड़ में पीछे नहीं है। आज पूरे देश में मुम्बई की आरे कालोनी में हरे पेंड़ों की कटाई को लेकर चर्चा है। एक तरफ हरे पेंड़ों को काटने से रोकने के लिए पर्यावरण प्रेमी और स्थानीय लोग आंदोलित हैं तो दूसरी तरफ पेंड़ कटते ही जा रहे है। राहत की बात है कि अदालत ने फिलहाल हरे पेंड़ों के कटान पर रोक लगा दी है। सवाल यह है कि पर्यावरण की सुरक्षा को लेकर हम राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भाषण देते है, स्वच्छ वातावरण की कल्पना करते है और कार्बन उत्सर्जन रोकने की बात करते है। परन्तु इसे धरातल पर उतारने की कोशिश भी नहीं करते। पर्यावरण जीवों का स्पंदन है जिसमें जीवन खिलता है, विकसित होता है और किलकारियाँ गूँजती है। जब पर्यावरण सुरक्षित नहीं रहेगा तो जीवन की कल्पना असंभव है।

इसलिए पर्यावरण की सुरक्षा के लिए पेंड़ों की सुरक्षा पहली प्राथमिकता है। जब जीवन ही नहीं रहेगा तो विकास का क्या अर्थ होगा। यह एक विचारणीय पहलू है। विकास आवश्यक है, परन्तु पर्यावरण की कीमत पर नहीं हमें यह सोचना होगा कि एक पौधा कई वर्षों के बाद परिपक्व होकर पेंड़ में बनता है और हम एक झटके में काटकर उसके जीवन को समाप्त कर देते है। पहाड़ हो, मैदान हो, पठार हो या समुद्र तटीय मैदान हो कहीं पर भी अनियोजित विकास एवं हरे पेंड़ों की कटाई को लेकर समय–समय पर पर्यावरण प्रेमी विरोध जताते रहे हैं, लेकिन उसका कोई असर दिखाई नहीं देता है और पर्यावरण संरक्षण की मुहिम खोखली नजर आती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पर्यावरण भूगोल, सविन्द्र सिंह
2. मानव भूगोल के सिद्धान्त (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्)
3. अमर उजाला 13 अक्टूबर, 2019

*****